दवाईक नाम देवनगरी लिपी में उपलब्ध करावलं गयलं बां।
अब डॉक्टर भी देवनगरी में दवाई लिखके देयं।.

1985 में अमृता नामक लडकी हमरे पास जॉच करय बीना आईलं।. ओकरे गला में पीला फोड भयलं रहां।. हम ओके फोडा क जन्तूं मारयवाली पेनीसीलन क दवा दिहें अऊर समझाऐ की अगर बुखार आई तर पॅरासिटॉमाल नामक दवा लं।. तीसरे दिन ओकर महतारी लडकी के निमोनिया के वजह से गंभीर अवस्था में हमरे पास लीयाईनं।. ऊ ठिक होय गईलं।. ओकरे बाद हम ओकरे महतारी से पुछे ह कि अईसन कईसे भयलं, हम अच्छेसे देखके परिक्षण किहेहं।. ओके दवाई लगाव्यं बीना दिहेहं।. लेकीन जवन दवाई ओकर महतारी ओके चार बार दियेस ऊ पॅरासिटॉमाल दवा रहीहं।. ओसे ओके बुखार आयल ही नाय अ ूर ओके पेनीसिलीन दवाई लीहिन नाही काहिकेकी पेनीसीलीन के ऊ बहुत बूखार क दवाई समझ गयलं रहीनं।.ईतरिकासे ई लडकीक बीमारी बढ़के ओकरे जानपर आयलं रहीं। सौभाग्य से ओकर महतारी ओकरे सही वक्त पे ही लेईके आईन अऊर ऊ बच गईलं।.

हम सझम गऐकी अग्रेजी में दवा क नाम पढ़के दवा नाय देय पवतीनं।. ऐहिबीना ई हमार गलती रहीं की हम दवाई क नाम अंग्रेजी में लिखे रहेहं।. ऊ समय से हम तय किहेह की अब दवाई क नाम मराठी, हिंन्दी में लिखय के चाहीं।. अईसन गलती भारत में 7 लाख गॉव में होत रहीहं।. ई सब कईसे बदला जाई।. ऐकरे बीना दवांईपे मराठी- हिन्दी में नाम छपय के चाहीं। ऐकरे बीना आपन सक्के प्रयास करयं के चाहीं।. ऐहिबीना हम हर दवाई कम्पनीक प्रतिनिधी के बतावथई कि दवाई क नाम मराठी - हिन्दी में छाप्यं लेकीन निर्णय कंम्पनी के अधिकारी क ही होथ।. ऐहिबीना हम भारते क 121 जरुरी दवाई कंम्पनी के अधिकारन के चिहठी लिखके ओनसभय से बिनंती किहे की दवाई क नाम मराठी -हिन्दी में छापल जायं । एक महिना इंन्तजार करयं के बाद जब कवनव ओकर प्रभाव पडतं नाय दिखल त दोबारा 181 कंम्पनीके हम चिहठी भेजेहं।.

राजस्थान में भयलं निरिक्षण से ई पता चला बाकी सिर्फ 20 प्रतिशत दंवाई मरीज के पेटे में जाथ अऊर 90 प्रतिशत नाय जात।. ऐकर वजह ई बाकी डॉक्टर जल्दी -जल्दी में दवाई लिखथेनं अऊर दवाई गलतं होय जाथं।. ई कुल गलती के बाद दवाई लेव्यके मरीज के आलस करथं।. कभव- कभव भूल जाथं।. हरसाल भारत मं 10,000 करोड रु. क दवाई क खपत बां।. ऐकर मतलब 8000 करोड रु. क दवाई व्यर्थ जाथं।. अईसन निष्कर्ष बां।. सबसे ज्यादा मृत्यु क मात्रा ई देश में बां।. ऐहिबीना ई फिजूल खर्ची अपने सक्के बिल्कुल माफिक नाय बां।. ई आपन सभे कईसे ठिक कई सकीथं? आजकाल डॉक्टरन क 50 प्रतिसत व्यवहार हिंन्दी में बां।. रोगी का कहता ई हिन्दी में बतावा जाथ।. लेकीन डॉक्टर हिन्दी में लिख्खथं । ऐहिबीना अंग्रेजी में ई सब व्यवहार होव्यके चाहीं।.

दवाई के काम में छोट गलती से आदमी क जान जाय सक्थं।. ऐहिबीना जीवन रक्षा व्यवहार (स्वभाव) रोगी क भाषा हिन्दीं में होव्यके चाहीं।. रोगी के भाषा में जब डॉक्टर नाय बोलतेन तब डॉक्टरन क कहब रोगीन के समझ में नाय आवत।. फल स्वरुप गलत दवा दी जाथं।. अऊर रोगी मरण जाथेन।. बादमें डॉक्टर पे जूर्म कायम होई के प्रकरण अदालत में होथं।. ई सब टालय बीना रोगी क भाषा या फिर हिन्दी मे ही बोलब जरुरी बां।.

ऐहिबीना हर पढ्ययवाले के प्रार्थना बा कि सब दवाईक व्यवहार हिंन्दी में होव्यके चाही। आईसन प्रार्थना डॉक्टरन के भी करयं के चाहीं।. सौभ्याग्य से कमप्युटर में भी अब कुलय भाषा क प्रयोग होय चुकल बां।. ऐहिबीना दवाई क नाम वगैरा सब उहय राज्यभाषा या हिन्दी में होईत अच्छा होई।.

निमलिखित कंमपनी देवनगरी में नाम लिखथं।. ई कंमपनी निके अब देश के विभिन्न भाषा में अऊर हिन्दी में नाम लिखय हेतू बताव्य के चाहीं।.

नाम- अमर हिंदुस्थानी, उम्र 1 वर्ष, दिनांक-20-10-96,
रोगनिदान- निमोनिया
यह दवा ले
क्र. कितना बॉटल दवा प्रमाण सुबह दोपहर साम रात कितना आखरी
का नाम दिन
तारीख

1 2 प्लेमीपेन

2 10 मिनीमॉल
गोली

वापस दिखाने के लिये 5 दिन के बाद लाना. शनिचर को शाम 7 बजे लाना.

पढ, मस्त बन, सबके बतावं।.

★ मन से संतोषी बनय, सुखी बनयं।.

★ दुनियॉ में लालच सबसे बड़ा दुश्मन बां अऊर शील जरुरी अलंकार।.

★ धन अऊर कवनव भी चीज क उपयोग कर, दान कर लेकीन धन क नाश मत होव्य दं।.

★ जगे में लोगनसे अत्रियं लेकीन हितकारक बोल्यवाला हि सच्चा दोस्त होथं।।

★ दुश्मन से छुटकारा पाव्यक दुई उपाय बां।.

एक्खे ओके खत्म करब या भाग जाऊबं।.

★ मृ्त्यु पास आव्यपे बडे बडन क बुदि्ध भी काम नाय आवतं।.

★ हमेशा सफल रहय बीना कपट से मित्रता जोडयं, लेकीन कपटता से बर्ताव न करय।.

★ दुश्मन अऊर बीमारी के पैदा होत्य ओके खत्म कर नाहित नाश निश्चित बां।.

★ बोल्य वाली मेहरारु ही पति पे अंकुश रख सकथं।.

★ मन्सेधुनके तारय वाली अऊर मारयवाली औरत ही होथीनं।